अध्याय प्रथम

शोध परिचय

अध्याय प्रथम
शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य है कि शिक्षा में अधिक से अधिक गुणवत्ता लाना है | इतना ही नहीं बच्चो को पूर्ण रूप से विकास करना है , जिससे वह अच्छा नागरिक बन सके | भारत में आज के विद्यालयीन शिक्षा पद्धति में बच्चो को बौद्धिक कौशलों पर ज्यादा केंद्रित किया जा रहा है |

विद्यालयों में इस प्रकार की शिक्षा लागू करनी चाहिए जिससे छात्र उसके जो अपने अनुभव है उसके अनुभवों को वह विश्लेषित करे एवं मूल्यांकित कर सके | शिक्षा प्रणाली में गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए शिक्षण के नये तरीके अपनाये जाने चाहिए | सीखने में अधिक बल दिया जाना चाहिए और रटने रटाने की जो प्रक्रिया है उस पर अंकुश लगाया जाना चाहिए | शिक्षा जगत की यह समस्या रहती है कि शिक्षक यह कैसे जाने की बालक कैसे सीखते है उनके सीखने को प्रभावशाली बनाया जाए |शिक्षा प्रणाली में सुधार किस प्रकार किया जाये इसके लिए अनेक शोध कार्य किये गए | उनके परिणामो के फलस्वरूप यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षा प्रणाली में मूल्यांकन प्रक्रिया में आधारभूत परिवर्तन लाये बिना शिक्षा में गुणवत्ता की मात्रा में वृद्धि नहीं हो सकती , मूल्यांकन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है | शिक्षा में गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए मूल्यांकन अधिक सहायक हो सकता है |

"शिक्षा ज्ञान की कुंजी है" तथा शिक्षा विकास की प्रक्रिया है | बच्चो में प्रतिभा का अथाह भंडार होता है |

इस प्रतिभा को विनष्ट होने से बचाना शिक्षा का मुख्य कर्तव्य है | आज के राष्ट्रीय परिप्रेक्ष में शिक्षा विकास की आधारशिला है |

शिक्षा में मूल्यांकन का विशेष महत्व होता है शिक्षक और अभिभावक यह जानना चाहते है की उनके बालकों ने कितना ज्ञान अर्जित किया है एवं भविष्य में उनसे क्या आशा की जा सकती है| पहले चार छः महीनो के अंतराल में परीक्षा होती थी तब बालक के अध्ययन शैक्षिक प्रगति की तरफ ध्यान नहीं दिया जाता था | तब परीक्षा सिर्फ रटंत प्रणाली पर आधारित थी आधुनिक समय में बच्चो का सतत तथा व्यापक मूल्यांकन किया जाता है | अब शिक्षकों को भी शिक्षण की विभिन्न पद्धतियों से परिचय कराया जा रहा है | जिससे शिक्षक प्रशिक्षित होकर विद्यार्थी व्यवहार का सम्पूर्ण मूल्यांकन करने में सक्षम हो सके |

परीक्षण के क्षेत्र में जिन परीक्षाओ का निर्माण होता है वे प्रायः आत्मगत होती है उनके विरोध में वस्तुनिष्ठ परीक्षाओ का प्रयोग हुआ है, परंपरागत परीक्षाओ का दूसरा दोष यह है कि विश्वसनीय नहीं होती यदि किसी समूह पर यदि एक ही परीक्षा को दो बार दिया जाये तो प्राप्तांको की दो श्रेणियों के बीच कोई सम्बन्ध नहीं पाया जाता| मूल्यांकन शिक्षण के उद्देश्यों और व्यवहारगत परिवर्तनों के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है साथ ही मूल्यांकन छात्र के सर्वांगीण विकास का चित्र खींचने का प्रयास करता है, विकास का मापन तभी हो सकता है जब शिक्षक अनेक प्रकार के मापन यंत्रो का प्रयोग करे | आज शिक्षक परीक्षा पत्रों द्वारा बालक ने क्या सीखा है, मात्र इसी बात का परीक्षण करता है | यदि सही मायने में उसे मूल्यांकन करना है तो बालक के सभी प्रकार के विकास का मापन करना चाहिए | मूल्यांकन की प्रक्रिया निरंतर जारी रहती है | बालक के पूर्ण शैक्षिक विकास की जानकारी समय - समय पर प्राप्त करना मूल्यांकन का प्रमुख दायित्व होता है मूल्यांकन हेतु एक अध्यापक शिक्षा के उद्देश्यों तथा प्रत्याशित व्यवहारगत परिवर्तनो

का मापन तभी कर सकेगा जब वह पूर्ण रूप से छात्रों के प्रति सचेत रहेगा |

1.2 शोध कार्य से सम्बंधित शब्दों की परिभाषा

मूल्यांकन की अवधारणा

मूल्यांकन अध्यापन अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है जब हम किसी वास्तु की गुणवत्ता का अध्ययन या आंकलन करते है तो उसे मूल्यांकन कहते है | यह पढाने में शिक्षकों की तथा सीखने में विद्यार्थियों की मदद करता है | मूल्यांकन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, यह मूल्य निर्धारण में शैक्षिक स्तर अथवा विद्यार्थियों की उपलब्धियों की जानने में सहायक होता है |

अध्यापन अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन की महत्व पूर्ण भूमिका होती है |

"मूल्यांकन किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम के किसी भी एक पक्ष के विषय में सूचना एकत्र करना, उसका विश्लेषण और व्याख्या है जो इसकी प्रभावित अन्य परिणामो को परखने की मान्य प्रक्रिया का एक भाग है"

मूल्यांकन एक साधन है जिसके आधार पर अध्यापक अपने प्रयासों की सफलता एवं असफलता का बोध करता है | इतना ही नहीं मूल्यांकन के द्वारा वह अपनी शैक्षिक प्रक्रिया शिक्षण विधि एवं पाठ्यवस्तु के स्तर में सुधार लाने का प्रयत्न भी करता रहता है | मूल्य निर्धारण में छात्र को बताया जाता है की उसके अंको के आधार पर सभी छात्रों के मध्य उसकी रैंक कहा पर है | अतः मूल्यांकन के अंतर्गत विद्यार्थी के व्यवहार का परिमाणात्मक तथा गुणात्मक व्यवहार का अध्ययन एवं उसके मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया मूल्यांकन कहलाती है |

यदि व्यक्ति कोई क्रिया करता है तो उस क्रिया को करने का कोई न कोई उद्देश्य होता है और उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ही वह उस क्रिया को योजनाबद्ध तरीके से

सम्पन्न करता है कुछ समय के उपरांत वह व्यक्ति यह देखने का प्रयाश करता है कि वह क्रिया योजनानुसार चल रही है कि नहीं तथा उसके द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया जा रहा है | इस प्रकार की जांच करना ही सामान्यतः मूल्यांकन कहलाता है |

शिक्षा के क्षेत्र में भी शिक्षा देने के कुछ निश्चित उद्देश्यों की पूर्ती हेतु ही अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया का अनुसरण किया जाता है शिक्षक द्वारा सुविचारित योजनानुसार शिक्षण कार्य किया जाता है एवं शिक्षार्थी उस ज्ञान को हृदयंगम करने का प्रयास करते है शिक्षार्थी ने वह ज्ञान किस सीमा तक हृदयंगम किया है एवं शिक्षा के उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है ? मूल्यांकन द्वारा यह पता लगाना संभव है, कि शिक्षार्थी पर शिक्षण कार्य का क्या प्रभाव है एवं अध्यापक कार्य में कहा तक सफल रहा है |

मूल्यांकन एक स्वतः परिभाषित शब्द है मूल्यांकन से हमें किसी वस्तु या किसी प्रणाली की उपयोगिता के सन्दर्भ में ज्ञान प्राप्त होता है | मूल्यांकन हमारे विद्यार्थियों के ज्ञान की सीमा निर्धारित करता है | एवं उनके क्षमताओं का गुणात्मक निर्णय करता है | मूल्यांकन की प्रक्रिया पूर्णरूपेण मनोवैज्ञानिक है | यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका सम्बन्ध शिक्षण के मापन एवं सीखने के उद्देश्यों सेहोता है मूल्यांकन का स्वरुप अधिक व्यापक है | इसका मूल उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है,परीक्षा एवं मापन मूल्यांकन के ही अंग है,परंपरागत परीक्षाओ द्वारा ज्ञानात्मक उद्देश्यों का ही मापन किया जाता है |

शिक्षा का मापन और मूल्यांकन का विद्यार्थियों, शिक्षकों और अविभावको तीनो की दृष्टि से बहुत महत्व है छात्र को अपनी योग्यता का पता लगता है जिससे उसमे

आत्मविश्वास का विकास होता है,उसे अध्ययन और परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है | अध्यापक को अपनी शिक्षण विधि और शिक्षा

योजना में सुधार करने का अवसर मिलता है | अविभावक को अपने बालको की सही प्रगति का ज्ञान होता है |

मूल्यांकन का अर्थ

मूल्यांकन दो शब्दों से मिलकर बना है, मूल्य और अंकन इस प्रकार मूल्यांकन का शाब्दिक अर्थ हुआ छात्र के गुण- दोषो की व्याख्या करके उसके सम्बन्ध में उचित निर्णय करना अथवा उसके यथार्थ मूल्य का निर्धारण करना |

विद्यार्थियों को जो शिक्षा दी जाती है उसके कुछ उद्देश्य होते है ये उद्देश्य जितने स्पष्ट होते है शिक्षक को शिक्षा प्रदान करने में उतनी ही सफलता मिलता है | मूल्यांकन से हमारा तात्पर्य यह पता लगाना है की कोई वस्तु मात्रा में कितनी अधिक या कितनी काम है | इस प्रकार मूल्यांकन का अर्थ यह हुआ कि हमें यह ज्ञात हो कि जो कार्य हम कर रहे है उसका मूल्य क्या है?

विद्यार्थियों को शिक्षित करना हमारा उद्देश्य है इन उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए पाठ्यक्रम बनाया जाता है जिस पर हमारी पाठ्यपुस्तके बनती है और इन्ही पुस्तकों से शिक्षक पढ़ाता है | विद्यार्थियों को शिक्षक जो सिखाता है या बच्चे अपने स्तर के अनुरूप सीखते है | उसको जानने के लिए हमें मूल्यांकन की आवश्यकता पड़ती है | अतः हम कह सकते है की मूल्यांकन करने के निम्न उद्देश्य है

(i) विद्यार्थियों ने क्या सीखा है और क्या नहीं |

(ii) बच्चो द्वारा सीख न पाने के क्या कारण हो सकते है |

(ii) किस विषय में अभ्यास करने की आवश्यकता है |

अभिप्राय यह है कि मूल्यांकन के साथ उनकी कमजोरियों का भी पता लगाया जा सकता है

विभिन्न परिप्रेक्ष में मूल्यांकन

राधाकृष्णन कमीशन (1948-49) के अनुसार मूल्यांकन

देश में प्रचलित मूल्यांकन व्यवस्था की आयोग ने तीव्र आलोचना की, कि विश्वविद्यालय शिक्षा पर परीक्षा प्रभुत्व छाया है | आयोग ने उल्लेख किया यदि हम विश्वविद्यालय की शिक्षा में केवल एक विषय में सुधार का सुझाव दें तो वे केवल परीक्षाओ से सम्बंधित होनी चाहिए यह सत्य है कि परीक्षाओ के प्रति भारत तथा विश्व भर में प्रबल असंतोष है |

परन्तु हम पूर्णरूप से दृश्टिकोण के पक्ष में नहीं है | यदि परीक्षाओ को उचित प्रकार से व्यवस्था की जाये तो वे शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख स्थान ग्रहण कर सकती है |

परीक्षा प्रणाली में सुधार के लिए आयोग ने निम्न सुझाव प्रस्तुत किये है |

1. प्रत्येक विश्वविद्यालय में एक परीक्षक बोर्ड की स्थापना की जाये|
2. छात्रों के कक्षा कार्यो को भी महत्व प्रदान किया जाये|
3. स्नातकोत्तर तथा व्यावसायिक परीक्षाओ में लिखित परिणामो के साथ-साथ मौखिक परीक्षाओ को भी सम्मिलित किया जाये|
4. परीक्षाओ का चुनाव योग्यता के आधार पर अत्यंत सावधानी के साथ किया जाये, किसी अध्यापक को तीन वर्ष से अधिक परीक्षक न बनाया जायें |

कोठारी आयोग 1964-66 के आधार पर मूल्यांकन

मूल्यांकन एक क्रमिक प्रक्रिया है जो की सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है और जो शिक्षा के उद्देश्यों से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित है | आयोग ने प्रचलित पद्धति में सुधार करने के लिए निम्न विचार व्यक्त किये गए है |

1. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को विश्व विद्यालयों की सहायता से केंद्रीय परीक्षा सुधार यूनिट की स्थापना करनी चाहिए |

2. विश्वविद्यालयों के शिक्षकों को सेमिनारों वर्कशॉप एवं विचार सम्मेलनों का आयोजन करके मूल्यांकन की नवीन उन्नत विधियों की जानकारी प्रदान की जानी चाहिए |

3. शिक्षक विश्वविद्यालयों में वाह्य परीक्षा प्रणाली को समाप्त कर स्वयं अध्यापको द्वारा आंतरिक तथा क्रमिक मूल्यांकन की प्रणाली को लागू किया जाना चाहिए |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986(संशोधित POA1992) के अनुसार मूल्यांकन का अर्थ

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन जिसमे अनुदेशन की पूरी अवधि तक प्रदत्त शिक्षा के शैक्षणिक एवं शैक्षणिकेत्तर दोनों ही पक्ष शामिल है| इस अवधारणा को राज्य स्तरों पर परीक्षा निकायों बोर्ड एवं विश्वविद्यालयों के माध्यम से निर्धारित प्रपत्रों के अनुरूप लागू करने के लिए निर्देशित किया गया है,कहने की आवश्यकता नहीं है कि मूल्यांकन का यह स्वरुप औपचारिक रूप से स्वीकृत हो जाने पर भी अभी तक

जर्मीनी तौर पर अधिकांश संस्थाओ की कार्य पद्धति में स्थान नहीं पा सका है जिससे हमारी शिक्षण व्यवस्थाओ की गुणवत्ता प्रभावित हुई है |

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 के अनुसार मूल्यांकन

सफलतापूर्वक सीखने के लिए बिना उच्चस्तरीय मूल्यांकन के अध्यापन संभव नहीं है | इसीलिए अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया में मूल्यांकन का अन्तर्निहित होना आवश्यक है | यह जितना ही अधिक होगा, उतने ही बेहतर सीखने के परिणाम मिलेंगे | इसीलिए मूल्यांकन प्रणाली की रचना ऐसी होनी चाहिए की शिक्षक जो पढ़ाते है | और छात्र जो सीखते है उसे प्रभावित करने का यह शक्तिशाली माध्यम बने | लेकिन साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि मूल्यांकन मानवीय हो और शिक्षार्थी को एक जिम्मेदार व उत्पादक नागरिक की तरह विकसित होने के काबिल बनाये | केवल इतना ही नहीं , मूल्यांकन को लगातार पाठ्यवस्तु की प्रभावशीलता कक्षाई प्रक्रियाओं और प्रत्येक शिक्षार्थी के विकास के बारे में प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देनी होगी , जो मूल्यांकन प्रक्रिया की उपयुक्तता के अतिरिक्त होगी , इसीलिए यह इस हद तक लचीली हो की उसका प्रयोग किया जा सके और उसका शिक्षार्थी समूहों की विशिष्ट स्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलन किया जा सके |

मूल्यांकन विभिन्न प्रकार के निर्णय लेने के उद्देश्य से संज्ञानात्मक और सह - संज्ञानात्मक दोनों ही क्षेत्रों में छात्रों के सीखने की गति और उपलब्धियों के बारे में साक्ष्यों का संकलन विश्लेषण और व्याख्या करने की एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है | इस प्रकार मूल्यांकन में सूचनाओं का संग्रह, विश्लेषण एवं निर्णय लेना निहित है |

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार आंकलन और मूल्यांकन का अर्थ

भारतीय शिक्षा में मूल्यांकन शब्द परीक्षा तनाव और दुश्चिंता से जुड़ा हुआ है | पाठ्यचर्या की परिभाषा और नवीनीकरण के सभी प्रयास विफल हो जाते है, अगर वे स्कूली शिक्षा प्रणाली में जड़ें जमायें मूल्यांकन और परीक्षातन्त्र के अवरोध से नहीं जूझ सकते| हमें परीक्षा के उन दुष्प्रभावों की चिंता है,जो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सार्थक बनाने और बच्चो के लिए आनंददायी बनाने के प्रयासों पर पड़ते है | वर्तमान में बोर्ड की परीक्षाएं स्कूली वर्षो में होने वाले हर आंकलन और हर तरह के परीक्षण को नकारात्मक रूप से ही प्रभावित करती है | इसमें शाला पूर्व -स्तर में होने वाला आंकलन और परीक्षण भी शामिल है |

एक अच्छी मूल्यांकन और परीक्षा पद्धति सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन सकती है जिसमे शिक्षार्थी और शिक्षा तंत्र दोनों को ही विवेचनात्मक और आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि से फायदा हो सकता है | यह भाग मूल्यांकन और आंकलन को सम्बोधित करते हुए शुरू होता है,क्योकि ये सीखने सिखाने की प्रक्रिया के लिए पाठ्यचर्या के भाग की तरह प्रासंगिक होते है|

आंकलन एवं मूल्यांकन एवं उद्देश्य

शिक्षा का सरोकार एक सार्थक व उत्पादक जीवन की तैयारी से होता है और मूल्यांकन आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि देने का तरीका होना चाहिए | यह प्रतिपुष्टि इस बात की होती है कि हम ऐसी शिक्षा लागू करने में किस हद तक सफलता प्राप्त कर पाएं इस परिप्रेक्ष से देंखे तो वर्तमान में चल रही मूल्यांकन की प्रक्रियाएं जो केवल

कुछ ही योग्यताओ को मापती और आंकलित करती है | बिलकुल ही अपर्याप्त है और शिक्षा के उद्देश्यों की ओर प्रगति की सम्पूर्ण तस्वीर नहीं खींचती है |

लेकिन मूल्यांकन का यह सीमित प्रयोजन भी अकादमिक और शैक्षिक विकास पर प्रतिपुष्टि देने वाला, तभी बन सकता है जब शिक्षक पढाने से पहले ही न केवल आंकलन के तरीको की तैयारी करे बल्कि मूल्यांकन के मानकों और उसके लिए प्रयुक्त होने वाले औजारों की भी तैयारी करें | विद्यार्थियों की उपलब्धि की गुणवत्ता की जांच के अलावा एक अध्यापक को विभिन्न विषयो में उनकी उपलब्धि की जानकारी इकट्ठा कर उसका विश्लेषण कर और उसकी व्याख्या करनी होगी | तभी अध्यापक विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों के अधिगम की सीमा की एक समझ बना पाएंगे | आंकलन का प्रयोजन निश्चय ही सीखने - सिखाने की प्रक्रियाओं एवं सामग्री का सुधार करना है,और उन लक्ष्यों पर पुनर्विचार करना है जो स्कूल के विभिन्न चरणों के लिए तय किये गए है | यह पुनर्विचार और सुधार इस आधार पर किया जा सकता है कि शिक्षार्थियों की क्षमता किस हद तह विकसित हुई, यह कहने की जरूरत नहीं होनी चाहिए कि यहाँ इस आंकलन का मतलब विद्यार्थियों का नियमित परीक्षण कतई नहीं है | बल्कि दैनिक गतिविधियों और अभ्यास के उपयोग से अधिगम का बहुत ही अच्छा आंकलन हो सकता है |

शैक्षिक मापन और मूल्यांकन का सामान्य परिचय

विद्यार्थी अपने आस - पास के वातावरण तथा अपने नित्य के क्रिया कलापों से कुछ न कुछ सीखतें है उनका सीखना किसी बंधन के सहज रूप से चलता रहता है | परन्तु स्कूलों में बच्चो की स्थिति कुछ अलग हो जाती है | क्योकि यहाँ हम उनके लिए कुछ पाठ्यक्रम, तरीके,नियम,समय सीमा तय कर देते है|

1.3 समस्या कथन

समस्या कथन निम्न प्रकार है |

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे मूल्यांकन विधि में शिक्षकों को आने वाली समस्याओं का अध्ययन |

1.4 शोध कार्य के उद्देश्य

(i) केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे मूल्यांकन विधि में शिक्षकों को आने वाली समस्याओं का अध्ययन |

(ii) केंद्रीय विद्यालयों में शिक्षकों को मूल्यांकन विधि में आने वाली समस्याओं का अध्ययन |

(iii) केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे मूल्यांकन विधि में शिक्षकों को विभिन्न विषयो में आने वाली समस्याओ का अध्ययन |

1.5 प्रस्तुत अध्यन की आवश्यकता एवं महत्व

मूल्यांकन के द्वारा विद्यालयों में पढ़ा रहे शिक्षकों को प्रभावी शिक्षण युक्तियाँ एवं रणनीतियों के अनुप्रयोग में सहायता करता है | मूल्यांकन सर्वांगीण विकास में मार्ग प्रशस्त कर भावी अध्ययन में निर्देशन एवं परामर्श देने में सहायक है | यह विद्यार्थियों की कमियों,सकारात्मक क्षमता,अधिगम आवश्यकता जानने में शिक्षक की मदद करता है | जिससे शिक्षक बच्चों का सही प्रकार से विकास कर सकें | मूल्यांकन अभिप्रेरणा बढाकर अधिगम लक्ष्य तक पहुंचने तथा गुणवत्ता बढ़ने में मदद करता है |

मूल्यांकन विद्यार्थियों की कमियों उसकी सकारात्मक क्षमताओं उनकी अधिगम आवश्यकताओं को जानने समझने में शिक्षक की विशेष मदद करता है | जिससे वह शिक्षण की इकाई में उपेक्षित सुधारात्मक युक्तियों का सही-सही रूप में प्रावधान कर लेता है |

मूल्यांकन के द्वारा विद्यार्थियों की कमी का पता लगाकर शिक्षक उन कमियों को पूरा करने की कोशिश करता है | जिससे शिक्षक विद्यार्थी का सही प्रकार से विकास एवं मार्गदर्शन कर सके |

मूल्यांकन के द्वारा शिक्षकों को यह ज्ञात होता है की विद्यार्थी को किस विषय में अभ्यास करने की जरूरत है जिससे विद्यार्थी का मार्गदर्शन सही प्रकार से किया जा सके जो उसके जीवन के किये उपयोगी है | और किन करने से विद्यार्थी सीख नहीं पाते | मूल्यांकन विद्यार्थियों की कमियों को उजागर करने में मदद करता है, जिससे विद्यार्थियों का उचित प्रकार से विकास हो सके विद्यार्थियों की लक्ष्य पूर्ति और गुणवत्ता बढ़ाने में मदद करता है

1.6 अध्ययन की सीमांकन-

इस लघु शोध की निम्नलिखित परिसीमायें हैं |

1. प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश राज्य के भोपाल जिले तक सीमित है |
2. प्रस्तुत अध्यन भोपाल जिले के केवल दो केंद्रीय विद्यालय तक सीमित है |
3. प्रस्तुत अध्ययन केंद्रीय विद्यालय (बैरागढ़) एवं केंद्रीय विद्यालय क्र-1 मैदा मिल भोपाल तक सीमित है |
4. प्रस्तुत अध्ययन शिक्षकों को मूल्यांकन विधि में आने वाली समस्याओं तक ही सीमित है |
5. प्रस्तुत अध्ययन 21 शिक्षकों तक ही सीमित है |